गणाचार्यश्री 108 विरागसागरजी महाराज द्वारा विरचित जलबिन्दु महाकाव्य के आधार पर

बिन्दु से सिन्धु की यात्रा

जलबिन्दु महाकाव्य के परिप्रेक्ष्य में

– डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)
संयुक्त मंत्री, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रिपरिषद्

जीवन श्रेष्ठ बनाना प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है, क्योंकि श्रेष्ठ जीवन ही सुख और आनंद का विषय है। श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए हमें सदैव सरल, विनम्र और सहज होना पड़ता है। अहंकार, ममकार आदि दुर्भावों को हटाना पड़ता है। नीर में क्षीर की तरह और क्षीर में नीर की तरह मिलना होता है। एक-एक बूंद से जल का बहुत बड़ा स्त्रोत बनना पड़ता है। परम पूज्य गणाचार्यश्री 108 विरागसागरजी महाराज ने अपने जीवनकाल में साहित्यसृजना की अपार सम्पत्ति खड़ी की है, जो उपभोग करने के लिए भारतवर्ष के लोगों के लिए समय पर्याप्त नहीं है। उनका बौद्धिक कौशल, चिंतन की धारा, शोधात्मक प्रवृत्ति और गहन विचारणा ने नवीन-नवीन सृजना को प्रकट किया है। इसी क्रम में आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज ने जलबिन्दु महाकाव्य की रचना की है। यह महाकाव्य विचारों और भावों से उन्नत होता हुआ मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने के महत्वपूर्ण आयाम को प्रकट करने के लिए सर्वोत्तम सोपान है। आचार्यश्री ने इसे दो खण्डों में लिखा है, प्रथम खण्ड में नौ अध्याय हैं और द्वितीय खण्ड में बारह अध्याय हैं। यहाँ चर्चा कर रहे हैं द्वितीय खण्ड के अठारहवें अध्याय में वर्णित विषय मैं सिन्धु बनूंगी। इस अध्याय में 14 काव्यों की श्रृंखला और अन्त में अध्यायान्त-मंगलाचरण भी दिया है। यह अध्याय व्यक्ति की उन मनोवृत्तियों का निराकरण हैं, जिनके कारण व्यक्ति संसार में दुःख पाता है और मृत्यु के बाद भी प्राप्त होने वाली पर्यायों में दुःख पाता है अर्थात् इसमें उन सभी विषयों का उल्लेख उत्कृष्ट रूप से किया है जिनसे व्यक्ति अपने जीवन

का सहज-सरल बनाता हुआ सार्थक जीवन जिएं और अन्त समय श्रेष्ठता पूर्वक करते हुए अगले भवों में भी उत्कृष्ट जीवन शैली को प्राप्त कर सकें। आचार्यश्री लिखते हैं -

मैं मानती हूँ,
कि अभी मैं
जल बिन्दु हूं
सत्य मैं एक
जलबिन्दु ही हूँ
बिन्दु को बिन्दु
स्वीकारना ही
सिन्धु बनने की
शुरुआत है।

उनकी उपरोक्त बात लघुता का अद्वितीय उदाहरण है। जीवन में जितनी लघुता और विनम्रता होगी व्यक्ति उतना ही ऊपर उठेगा। उसकी ऊँचाईयाँ उसे और उसके आसपास के परिवेश को भी आनंद दिलायेगी। यदि वह अहंकार में आ जाए तो उसका पतन निश्चित है, इस संबंध में आचार्यश्री कहते हैं-

यदि कोई भी बिन्दु

स्वयं अपने आपको

सिंधु ही मान बैठे तो

वह बिन्दु सदा बिन्दु ही

बनी रहेगी कभी भी

सिंधु नहीं बन सकेगी

न कभी बन पायेगी।

आईए! इस आलेख के माध्यम से हम यहाँ समझने का प्रयास करेंगे कि बिन्दु से सिन्धु की यात्रा में कितना आनंद है? और सुख है? कितना अधिक परिश्रम, श्रम की साधना, आत्माराधना, वैचारिक क्रान्ति, भावना का उद्वेग आदि मनोभाव हैं।

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥[1]

विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से योग्यता आती है। लघुता (विनम्रता) व्यक्ति को योग्य और धर्मपरायण बनाती है।

लघुता का भाव – लघुता शब्द के मायने हैं जीवन में सरलता और विनम्रता आना, हमारे व्यवहार और भाषा में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का झलकना। लघुता,जैसे जल की एक बूँद में पूरा सागर झलक सकता है, वैसे ही लघुता में गहराई छिपी होती है। वाणी में लघुता के मायने है—कम शब्दों में प्रभावी बात कहना। संत कबीर, रहीम और तुलसीदास जैसे कवियों ने अपने दोहों में यही लघुता दिखाई है। उदाहरण के लिए:

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर,

पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

व्यवहार में लघुता – व्यवहार में लघुता का अर्थ है—विनम्रता, अहंकार रहित जीवन और सहजता। आज के समाज में जहाँ दिखावे और दिखने की होड़ है, वहाँ लघुता का भाव संयम, शांति और गरिमा का प्रतीक बन जाता है। एक सच्चा ज्ञानी कभी अपने ज्ञान का प्रदर्शन नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि सादगी ही सच्ची सुंदरता है।

निज मनुसीया आपना, आपै ही लघु जानि।

औरन को मानै बड़ा, कहि कबीर यहि ग्यानि।[2]

---

[1] नीतिशतकम्, भर्तृहरि

[2] कबीर ग्रंथावली

विज्ञान और प्रकृति में लघुता – परमाणु से लेकर सूक्ष्म जीवाणुओं तक, प्रकृति ने लघुता में ही अपार ऊर्जा और जीवन की रहस्यात्मकता छिपाई है। विज्ञान भी आज माइक्रो की ओर बढ़ रहा है—क्योंकि सूक्ष्मतम में ही सार है।

चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय।

दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥[3]

लघुता का भाव कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक गहन समझ और परिपक्वता का प्रतीक है। यह हमें दिखाता है कि जीवन की सच्ची सुंदरता सरलता, विनम्रता और सादगी में है। लघु होते हुए भी प्रभावशाली कैसे बना जाए—यही लघुता का आदर्श है।

जहाँ गहराई होती है, वहाँ शोर नहीं होता।

जहाँ लघुता होती है, वहाँ प्रभाव होता है।

तरु वै फलदानाय फलदानाय वृक्षाः नम्रन्ते, तोयदानाय घनाः नम्रन्ते।

गुणिदानाय सज्जनाः नम्रन्ते, नम्रता एव शोभा गुणिनाम्॥

जैसे फल देने वाला वृक्ष झुक जाता है, वैसे ही गुणवान व्यक्ति हमेशा विनम्र होता है। यह लघुता का आदर्श वर्णन है।

दृढ़ इच्छाशक्ति –

मैं तो एक बिन्दु हूँ

औ वह सिंधु है

मुझे तो विश्वास है

---

[3] संत कबीर

अटल विश्वास है

मैं भी सिन्धु बनूँगी

अवश्य ही बनूँगी

आज नहीं तो कल

निश्चित ही बनूँगी

सिंधु की संगति में

एक दिन सिंधु और

मैं महासिंधु बनूँगी।

अहंकार का भाव – यदि कोई भी बिन्दु

स्वयं अपने आपको

सिन्धु ही मान बैठे तो

वह बिन्दु सदा बिन्दु ही

बनी रहेगी कभी भी

सिन्धु नहीं बन सकेगी

न कभी बन पायेगी।

बिन्दु को स्वयं

अपने आप में

सिन्धु मानना ही

बिन्दु का सबसे

अहं अहंकार है

इसे हटाये बिना

बिन्दु, बिन्दु ही रहेगी

सिंधु न बन सकेगी।

बिन्दु से सिन्धु बनने का उपाय –हे बिन्दु! तू सिंधु

बनना चाहती है तो,

ध्यान रख प्रथमतः

अभिमान तज और

विनय को भज तभी

तू सिंधु बनेगी सच

मेरीय यह बात मान

सरलता, सहजता,

लघुता का ज्ञान,

स्वभाव का ध्यान,

करेगा उत्थान।

अहंकार गलन –

बिन्दु को सिन्धु का

अभिमान तभी तक

ही तो होता रहता है

जब तक की उसको

सिंधु-दर्शन नहीं होते

अंतदर्शन के बिना ही

सदा केवल प्रदर्शन ही

प्रदशर्न होता रहता है।

अहंकार गलन और उसका फल –

सिंधु के दर्शन पा

बिन्दु का अभिमान

चूर-चूर हो जाता है,

दूर दूर हो जाता है

तभी तो वह दर्शन

कूल-कूल होता है

प्रतिकूलता को भूल

सुकून अनुकूल होता है।

भाग्य निर्माण -

भावना सदैव ऊँची रखनी चाहिए

इसके लिए किसी भाग्य की कभी

इंतजारी नहीं की जाती है क्योंकि

भावना भाग्य को निर्मित करती है

भावना शुभ है तो सौभाग्य, अन्यथा

दुर्भाग्य ही दुर्भाग्य प्रदान करती है

सौभाग्य शांति व अनुकूलता देता है

दुर्भाग्य अशान्ति व प्रतिकूलता देता है

हम स्वतंत्र है जैसी भी भावना भायेंगे

नियम से पूर्णतः फल वैसा ही पायेंगे

शास्त्र शुभभावना को भव नाशनि व

अशुभ भावना को भव वर्धिनी कहा है।

बिन्दु के अनेक रूप –

यह जल बिन्दु कभी

बिन्दु का रूप लेती,

कभी सर, सरिता व

सिन्धु का रूप लेती

कहीं कंकर से शंकर,

राई से पहाड़ बनती

कभी शिष्य तो कभी

वह गुरु बन जाती।

कभी दिया, घड़ा, कप बनती

कभी खेत की मिट्टी, मूर्ति बनती

कभी घर, तो कभी वह खप्पर भी

कभी फर्श, खलियान भी बनती

न जाने वह कितने रूप बदलती

व बदलते-बदलते हम सबकी

जीवन पद्धति भी वह बदलती

गरजना भी सभी को सिखाती

और वह बरसना भी सिखाती

कभी कोहरा बन छिपती छिपाती।।

कभी ओस बन पुष्प और

पत्तों पर आ विराजती

सदैव शोभा पाती कभी

भाप बनकर ऊपर जाती

और वह बादल बन जाती

जोर जोर से शोर मचाती

लोगों में घबड़ाहट लाती।

जलबिन्दु का प्रकोप –

जहाँ न बरसती वहाँ

लोगों को तरसाती,

कभी रोष दिखाती,

फसल, घर, नशाती

विकरालता लाती,

बाढ़ में सब कुछ

बहाती व रुलाती।

सीमा में रहो

सभी की सही ही

किंतु सीमा टूटी

तो बुरी से बुरी ही

हालात बनाती है

इसलिए गुरुओं ने

बताया सभी को

जिनवाणी ने पाठ

पढ़ाया सभी को

सीमा में रहो तुम

सीमा में चलो तुम

सीमा में बोलो तथा

अपनी इच्छाओं को

सीमित करते रहो तुम

बिन्दु का परिश्रम

सीमाओं का पालन

बिन्दु से सिन्धु की यात्रा की पूर्णता

उपसंहार